पद १ (राग: पिलु - ताल: धुमाळी)

किति दैव सुकृत हें फळलें। अजि म्यां परमामृत प्यालें।।धू.।। बसवुनी सन्मुख अवलोकुनियां। मानाभिमाना सोडविलें॥१॥ ज्ञानरूप मार्तांडप्रभूसी। सार्व काल मज जोडविलें।।२।।